मेन्स मास्टर

वि-वैश्वीकरण की कहानी

प्रसंग:
वि-वैश्वीकरण की कहानी हाल के वर्षों में कई कारकों के कारण तेजी से प्रमुख हो गई है। इसमे शामिल है:

• **व्यापार तनाव**: प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते व्यापार तनाव ने मुक्त व्यापार और वैश्विक सहयोग के भविष्य के बारे में चिंताएं पैदा कर दी हैं।
• आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान: COVID-19 महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में कमजोरियों को उजागर किया, जो महत्वपूर्ण सामग्रियों और वस्तुओं के लिए एकल स्रोतों पर निर्भरता से जुड़े जोखिमों को उजागर करता है।
• **तकनीकी प्रगति:** स्वचालन और विनिर्माण प्रौद्योगिकियों में प्रगति संभावित रूप से कुछ देशों को अधिक आत्मनिर्भर बनने में सक्षम कर सकती है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर उनकी निर्भरता कम हो सकती है।
• **भू-राजनीतिक विचार**: कुछ देश व्यापार निर्णय लेते समय विशुद्ध रूप से आर्थिक विचारों से अधिक राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक गठबंधनों को प्राथमिकता दे रहे हैं।

पृष्ठभूमि:
जबकि दुनिया ने हाल के दशकों में अति-वैश्वीकरण का दौर देखा है, जिसमें सीमा पार व्यापार और निवेश के तेजी से बढ़ते स्तर की विशेषता है, इस अंतर्संबंध के संभावित नुकसान के बारे में चिंताएं उभरी हैं। इन चिंताओं में शामिल हैं:

• **नौकरी का नुकसान**: कुछ लोगों का तर्क है कि वैश्वीकरण के कारण विकसित अर्थव्यवस्थाओं में नौकरियां खत्म हो गई हैं क्योंकि कंपनियां कम श्रम लागत वाले देशों में उत्पादन स्थानांतरित कर रही हैं।
• **आय असमानता:** विकसित देशों में बढ़ती आय असमानता के लिए कम वेतन वाले देशों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा को जिम्मेदार ठहराया गया है।
• **पर्यावरण संबंधी चिंताएँ:** लंबी दूरी तक माल का परिवहन पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में चिंताएँ पैदा करता है, जैसे कि कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि।
• **राजनीतिक अस्थिरता:** कुछ लोगों का तर्क है कि वैश्विक व्यापार पर अत्यधिक निर्भरता देशों को दुनिया के अन्य हिस्सों में आर्थिक झटके और राजनीतिक अस्थिरता के प्रति संवेदनशील बना सकती है।

वि-वैश्वीकरण क्या है?
वि-वैश्वीकरण का तात्पर्य अंतर्संबंध और अन्योन्याश्रितता के उच्च स्तर से संभावित बदलाव से है, जिसने हाल के दशकों में वैश्विक अर्थव्यवस्था की विशेषता बताई है। इसमें शामिल हो सकता है:

• **व्यापार बाधाओं में वृद्धि:** देश आयात को प्रतिबंधित करने और घरेलू उद्योगों की सुरक्षा के लिए टैरिफ, कोटा या अन्य उपाय लागू कर सकते हैं।
• **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में कमी:** सरकारें विदेशी कंपनियों को अपनी अर्थव्यवस्थाओं में निवेश करने से हतोत्साहित या प्रतिबंधित कर सकती हैं।
• **क्षेत्रीय व्यापार गुटों का गठन:** साझा हितों वाले देश क्षेत्रीय व्यापार समझौते बना सकते हैं जो अन्य देशों को बाहर कर देते हैं।
• छोटी और अधिक स्थानीयकृत आपूर्ति श्रृंखलाएँ: कंपनियाँ, लचीलापन बढ़ाने और जोखिमों को कम करने के प्रयास में, उत्पादन को घर के करीब ले जा सकती हैं या व्यापक देशों से सामग्री स्रोत कर सकती हैं।

क्या वि-वैश्वीकरण चल रहा है?
हालांकि वि-वैश्वीकरण की कहानी प्रचलित है, लेकिन यह सुझाव देने के लिए सीमित सबूत हैं कि यह एक व्यापक घटना है। यहाँ एक विश्लेषण है:

• **पूर्ण पैमाने पर वि-वैश्वीकरण के लिए सीमित सबूत:** जबकि कुछ क्षेत्रों में नीतिगत बदलावों के कारण व्यापार में गिरावट देखी गई है, शोध से पता चलता है कि व्यापार पैटर्न में बदलाव होने पर भी अंतर्निहित आर्थिक परस्पर निर्भरता बनी रहती है।
• **कुछ क्षेत्रों में निरंतर वृद्धि:** चिंताओं के बावजूद, हाल के वर्षों में सेवाओं में वैश्विक व्यापार, वित्तीय प्रवाह और छात्र गतिशीलता में वृद्धि जारी रही है, जो चल रहे अंतरराष्ट्रीय अंतर्संबंध का संकेत देता है।
• **पूर्ण अलगाव के बजाय पुनर्संरचना पर ध्यान दें:** पूर्ण पृथक्करण के बजाय, कई देश "मित्र-शोरिंग" रणनीतियों का अनुसरण कर रहे हैं, जिसका लक्ष्य विशिष्ट देशों पर निर्भरता कम करते हुए विश्वसनीय भागीदारों के साथ आर्थिक संबंधों को मजबूत करना है।

वि-वैश्वीकरण के बारे में चिंताएँ:
पूरी तरह से डी-वैश्वीकरण परिदृश्य के लिए सीमित साक्ष्य के बावजूद, यदि ऐसी प्रवृत्ति पूरी तरह से अमल में आती है तो संभावित नकारात्मक परिणाम मौजूद हैं:

• **वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में कमी:** डी-वैश्वीकरण से वैश्विक आर्थिक उत्पादन और विकास में गिरावट आ सकती है, विशेष रूप से विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
• **कम श्रम उत्पादकता**: वैश्विक बाजारों और विशेषज्ञता तक पहुंच कम होने से नवाचार और दक्षता में बाधा आ सकती है, जिससे श्रम उत्पादकता कम हो सकती है।
• **संसाधनों का गलत आवंटन:** डी-वैश्वीकरण से संसाधनों का अकुशल आवंटन हो सकता है, क्योंकि देश अधिक आत्मनिर्भर हो जाते हैं और संभावित रूप से उत्पादन प्रयासों की नकल करते हैं।
• **ज्ञान साझा करने में बाधा**: कम वैश्विक संपर्क ज्ञान और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान में बाधा बन सकता है, जिससे संभावित रूप से नवाचार और विकास धीमा हो सकता है।

वि-वैश्वीकरण प्रवृत्तियों के कारण:
अति-वैश्वीकरण से दूर देखे गए बदलावों में कई कारक योगदान दे सकते हैं:

• **भू-राजनीतिक तनाव:** अमेरिका और चीन जैसी प्रमुख शक्तियों के बीच बढ़ते तनाव ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की विश्वसनीयता और व्यापार व्यवधानों की संभावना के बारे में चिंताएं पैदा कर दी हैं।
• **आर्थिक चिंताएँ**: कुछ देशों में नौकरी छूटने, अनुचित व्यापार प्रथाओं और आय असमानता के बारे में चिंताओं ने संरक्षणवादी नीतियों के समर्थन को बढ़ावा दिया है।
• **तकनीकी प्रगति:** स्वचालन और 3डी प्रिंटिंग में प्रगति कुछ देशों को कुछ क्षेत्रों में अधिक आत्मनिर्भर बनने में सक्षम कर सकती है, जिससे संभावित रूप से आयात पर उनकी निर्भरता कम हो सकती है।

अति-वैश्वीकरण से वि-वैश्वीकरण की ओर स्थानांतरण:
हालाँकि वस्तुओं के व्यापार के मामले में अति-वैश्वीकरण का युग ख़त्म हो सकता है, लेकिन सबूत बताते हैं कि वैश्वीकरण ख़त्म नहीं हुआ है:

• सेवाओं, प्रौद्योगिकी और ज्ञान साझाकरण में वृद्धि: जबकि वस्तुओं के व्यापार में कुछ बदलाव देखने को मिल सकते हैं, सेवाओं, वित्तीय लेनदेन और अंतर्राष्ट्रीय जैसे क्षेत्रों में

भारत पर प्रभाव:

• **भारत इस बदलते परिदृश्य से निपट सकता है:**
  ◦ आर्थिक अवसरों के साथ सुरक्षा चिंताओं को संतुलित करना।
  ◦ पीएलआई और मेक इन इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से सेवाओं में अपनी ताकत का लाभ उठाना और घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना।
  ◦ क्षेत्रीय व्यापार समझौतों में भाग लेना और बुनियादी ढांचे की कनेक्टिविटी में सुधार करना।

निष्कर्ष:
जबकि कुछ रुझान अति-वैश्वीकरण से बदलाव का सुझाव देते हैं, पूर्ण वि-वैश्वीकरण असंभव लगता है। भारत रणनीतिक नीतियों को अपनाकर इस बदलते माहौल में अनुकूलन और विकास कर सकता है।

एक नई सफलता

प्रसंग:
• सापेक्ष निष्क्रियता की अवधि के बाद चंद्रमा पर लैंडिंग फिर से गति पकड़ रही है।
• अधिक देश (जैसे भारत) और निजी कंपनियां (जैसे इंटुएटिव मशीन्स) चंद्र अन्वेषण में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।
• यह भागीदारी मानव लैंडिंग पर पारंपरिक फोकस की तुलना में सफलता के लक्ष्यों और परिभाषाओं की एक विस्तृत श्रृंखला लाती है।

ऊँची मेज पर

पृष्ठभूमि:

• स्थापित अंतरिक्ष एजेंसियां:

◦ **इसरो (भारत):** अपनी तकनीकी प्रगति को मान्य करने और एक अग्रणी अंतरिक्ष अनुसंधान और उड़ान प्रदाता के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने का प्रयास कर रहा है।

◦ **रोस्कोस्मोस (रूस):** हाल के वर्षों में चुनौतियों का सामना करने के बाद अपनी पिछली प्रतिष्ठा वापस पाने का लक्ष्य।

• निजी कंपनियाँ: अंतरिक्ष क्षेत्र में महत्वपूर्ण खिलाड़ियों के रूप में उभर रही हैं, जिन्हें अक्सर अपने शुरुआती चरण में अंतरिक्ष एजेंसियों से समर्थन प्राप्त होता है।

महत्वपूर्ण मुद्दे:

• तकनीकी चुनौतियाँ:

◦ **नेविगेशन:** आईएम की हालिया लैंडिंग में नेविगेशन उपकरण की खराबी का सामना करना पड़ा, जिससे तकनीकी गड़बड़ियों की आशंका उजागर हुई और त्वरित अनुकूलन की आवश्यकता हुई।

◦ **डेटा ट्रांसमिशन:** कमजोर डेटा लिंक लैंडिंग की सफलता की पुष्टि करने और महत्वपूर्ण मिशन डेटा प्राप्त करने में देरी पैदा कर सकते हैं।

• प्रतिस्पर्धा और सहयोग के बीच संतुलन:

◦ निजी कंपनियां नवीन दृष्टिकोण और बढ़ी हुई चपलता प्रदान करती हैं, लेकिन निरंतर प्रगति के लिए एक स्वस्थ सार्वजनिक-निजी अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र महत्वपूर्ण है।

◦ संसाधनों और विशेषज्ञता के इष्टतम उपयोग के लिए विभिन्न खिलाड़ियों के बीच प्रतिस्पर्धा और सहयोग के बीच सही संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।.

हालिया पहल:

• नासा का वाणिज्यिक चंद्र पेलोड सेवा (सीएलपीएस) कार्यक्रम:

◦ **उद्देश्य:** वैज्ञानिक लक्ष्यों में योगदान करते हुए निजी विशेषज्ञता का लाभ उठाना है।

◦ **कार्य:** वाणिज्यिक चंद्र मिशनों पर वैज्ञानिक उपकरणों को शामिल करने के लिए धन देना, व्यापक वैज्ञानिक अन्वेषण और डेटा एकत्र करने में सक्षम बनाना।

◦ **विवरण:**

■ संपूर्ण मिशन के लिए नहीं, बल्कि उपकरणों के लिए धन उपलब्ध कराता है।

■ नासा की भागीदारी में लैंडिंग साइटों का सुझाव देना और कुछ उपकरणों का योगदान देना शामिल है।

■ 2020 तक, NASA ने 14 कंपनियों से अनुबंध किया था और कार्यक्रम के लिए 2.6 बिलियन डॉलर आवंटित किए थे।

• भारत में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को मंजूरी:

◦ **उद्देश्य:** भारत के भीतर एक अधिक गतिशील और प्रतिस्पर्धी अंतरिक्ष उद्योग को बढ़ावा देना है।

◦ **अपेक्षित परिणाम:**

■ भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में निवेश और नवाचार में वृद्धि की संभावना।

■ अधिक प्रतिस्पर्धी परिदृश्य का निर्माण, जिससे संभावित रूप से बेहतर दक्षता और लागत में कमी आएगी।

■ भारतीय और विदेशी संस्थाओं के बीच सहयोग में वृद्धि, ज्ञान के आदान-प्रदान और विशेषज्ञता साझाकरण को बढ़ावा।

आगे बढ़ने का रास्ता:

• व्यापक सहयोग: विश्व स्तर पर और देशों के भीतर, अंतरिक्ष अन्वेषण की प्रगति के लिए व्यापक सहयोग महत्वपूर्ण है। यह भी शामिल है:

◦ **सरकारी एजेंसियों के बीच समन्वय:** प्रयासों के दोहराव से बचने और प्रगति में तेजी लाने के लिए संसाधन, विशेषज्ञता और ज्ञान साझा करना।

◦ **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** सरकारी संसाधनों को निजी क्षेत्र की चपलता और नवाचार के साथ संयोजित करने के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थाओं की ताकत का लाभ उठाना।

• अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण: निजी अंतरिक्ष कंपनियों के विकास को प्रोत्साहित करना:

◦ नवाचार और निवेश के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देना।

◦ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सहयोग को बढ़ावा देने वाली नीतियों को लागू करना।

◦ वित्त पोषण कार्यक्रमों और बुनियादी ढांचे के विकास जैसी पहलों के माध्यम से सहायता प्रदान करना।

सहयोग को अपनाकर, विविध अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देकर और इसमें शामिल चुनौतियों से निपटकर, देश और निजी कंपनियां चंद्रमा की खोज के नए युग में साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम कर सकती हैं।

प्रसंग:

• **रायसीना डायलॉग** विदेश नीति और भू-रणनीति पर भारत का वार्षिक प्रमुख सम्मेलन है।

• इसका उद्देश्य वैश्विक नेताओं के लिए दुनिया के सामने आने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों और चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक प्रमुख मंच बनना है।

पृष्ठभूमि:

• संवाद के **9वें संस्करण** का उद्देश्य दुनिया के सामने आने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों और चुनौतियों पर वैश्विक नेताओं को शामिल करना है।

• यह संवाद अंतरराष्ट्रीय निर्णय लेने और वैश्विक व्यवस्था को आकार देने में अधिक प्रमुख भूमिका के लिए भारत की आकांक्षाओं के अनुरूप है।

रायसीना डायलॉग क्या है?

• **2016 में विदेश मंत्रालय (MEA)** द्वारा लॉन्च किया गया।

• विदेश नीति के मुद्दों पर खुली और समावेशी चर्चा के लिए "वैश्विक सार्वजनिक मंच" बनने का लक्ष्य।

• विश्व के नेताओं, राजनयिकों, नीति निर्माताओं, विद्वानों और व्यापारिक नेताओं को एक साथ लाता है।

• वैश्विक शासन, सुरक्षा, अर्थशास्त्र और तकनीकी प्रगति सहित कई मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है।

वार्ता के मुख्य परिणाम:

• वैश्विक शासन पर चर्चा:

◦ संवाद का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के शीर्ष पर असमानताओं को संबोधित करने और इसके व्यापक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने सहित वैश्विक शासन वास्तुकला में सुधार पर चर्चा शुरू करना है।

◦ भारत ने वैश्विक निर्णय लेने में अधिक प्रमुख भूमिका की अपनी इच्छा पर जोर दिया, और विदेश मंत्री एस. जयशंकर द्वारा भारत को "पुल बनाने वाली शक्ति" के रूप में वर्णित किए जाने की बात दोहराई।

• भारत की रणनीतिक पहुंच:

◦ संवाद ने भारत के लिए 2023 में जी-20 की मेजबानी में अपनी सफलता प्रदर्शित करने और रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया।

◦ बाल्टिक-नॉर्डिक मंच के प्रतिनिधियों सहित मध्य और पूर्वी यूरोप के बड़े मंत्रिस्तरीय दल ने इस क्षेत्र के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को मजबूत करने के भारत के प्रयासों को प्रतिबिंबित किया।

वे क्षेत्र जहां संवाद का अभाव:

• भागीदारी में सीमित विविधता:

◦ **पी-5 (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन, रूस), जी-7** और **ब्रिक्स-10** (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) देशों जैसी प्रमुख शक्तियों से वरिष्ठ मंत्रिस्तरीय उपस्थिति का अभाव।

◦ दक्षिण पूर्व एशिया, लैटिन अमेरिका और दक्षिण एशिया (नेपाल और भूटान को छोड़कर) जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों से न्यूनतम प्रतिनिधित्व। वैश्विक चुनौतियों पर यह सीमित दृष्टिकोण है।

◦ यूक्रेन युद्ध और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीनी आक्रामकता से संबंधित चर्चाओं से रूस और चीन को बाहर करना, इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर व्यापक चर्चा में बाधा उत्पन्न कर रहा है।

◦ चल रहे संघर्ष के संबंध में इज़रायली और फ़िलिस्तीनी पक्षों की ओर से कोई प्रतिनिधित्व नहीं, जिससे स्थिति की संतुलित समझ में बाधा आ रही है।

• चर्चाओं में संकीर्ण दृष्टिकोण:

◦ लोकतंत्र पर पैनल ने घटती स्वतंत्रता के संबंध में आंतरिक भारतीय चिंताओं पर चर्चा से परहेज किया, जिससे वैश्विक लोकतांत्रिक चुनौतियों को व्यापक रूप से संबोधित करने की संवाद की क्षमता सीमित हो गई।

◦ चर्चाओं में गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) की सीमित भागीदारी, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक चुनौतियों और समाधानों के बारे में एक संकीर्ण दृष्टिकोण सामने आया है। विविध दृष्टिकोणों की यह कमी संभावित रूप से सर्वांगीण समाधान तैयार करने में वार्ता की प्रभावशीलता में बाधा डालती है।

समग्र आउटलुक:

जबकि रायसीना डायलॉग ने महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर सफलतापूर्वक चर्चा की और एक बड़ी भूमिका के लिए भारत की आकांक्षाओं को प्रदर्शित किया, प्रमुख क्षेत्रों से विविध प्रतिनिधित्व की कमी और चर्चाओं में विशिष्ट चूक ने वास्तव में प्रतिनिधि "ग्लोबल पब्लिक स्क्वायर" बनने की इसकी क्षमता में बाधा उत्पन्न की। इन सीमाओं को संबोधित करके और अधिक समावेशी भागीदारी को बढ़ावा देकर, संवाद वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक अधिक मजबूत मंच के रूप में विकसित हो सकता है।

भारतीय खाद्यान्न की तुलना में दूध, फल और सब्जियों पर अधिक खर्च कर रहे हैं

1. **भोजन का घटता हिस्सा**:
• **स्पष्टीकरण**: औसत मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय (एमपीसीई) में भोजन का हिस्सा 1999-2000 के बाद से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लगातार घट रहा है।
◦ **ग्रामीण: 1999-2000 में 59.4% से 2022-23 में 46.4% (13% की गिरावट)।**
◦ **शहरी: 1999-2000 में 48.1% से 2022-23 में 39.2% (8.9% की गिरावट)।**
• **महत्व**: यह **एंगेल कर्व परिकल्पना** के अनुरूप है, जो बताता है कि जैसे-जैसे परिवारों की आय बढ़ती है, वे अपनी आय का एक छोटा हिस्सा भोजन जैसी आवश्यक वस्तुओं के लिए समर्पित करते हैं, अन्य वस्तुओं और सेवाओं के लिए अधिक आवंटित करते हैं।
2. **खाद्य व्यय में बदलाव:**
• **अनाज और दालें:**
◦ **टिप्पणियाँ**: कुल खाद्य व्यय में उनकी हिस्सेदारी ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में घट गई है। इससे चावल, गेहूं और दाल जैसे मुख्य खाद्य स्रोतों की खपत में संभावित कमी का पता चलता है।
◦ **संभावित कारण:** यह विभिन्न कारकों के कारण हो सकता है, जिनमें शामिल हैं:
■ **आहार प्राथमिकताओं में परिवर्तन:** उपभोक्ता व्यापक विविधता वाले खाद्य समूहों के साथ अधिक विविध आहार का विकल्प चुन सकते हैं।
■ **शहरीकरण और जीवनशैली में बदलाव**: व्यस्त जीवनशैली के कारण सुविधाजनक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों या बाहर खाने की खपत बढ़ सकती है, जिससे पारंपरिक खाद्य पदार्थों पर निर्भरता कम हो सकती है।
■ **आर्थिक कारक:** बढ़ती आय का स्तर उपभोक्ताओं को व्यापक प्रकार के भोजन विकल्प खरीदने की अनुमति दे सकता है।
• **दूध**:
◦ **टिप्पणियाँ**: 2022-23 में अनाज और दालों को मिलाकर दूध पर खर्च काफी बढ़ गया है। यह डेयरी उत्पादों की खपत पर बढ़ते जोर को इंगित करता है, जो संभावित रूप से निम्न कारणों से प्रेरित है:
■ **पोषण संबंधी जागरूकता**: उपभोक्ता प्रोटीन, कैल्शियम और अन्य आवश्यक पोषक तत्वों के लिए दूध के महत्व को पहचान रहे होंगे।
■ बेहतर पहुंच और सामर्थ्य: दुग्ध उत्पादों की बढ़ती उपलब्धता और सामर्थ्य भी इस प्रवृत्ति में योगदान कर सकती है।
• **फल और सब्जियां:**
◦ **अवलोकन**: उनकी हिस्सेदारी में भी वृद्धि हुई है, औसत भारतीय अब पहली बार खाद्यान्न (अनाज और दाल) की तुलना में उन पर अधिक खर्च कर रहा है। यह पोषण संबंधी विविधता और आहार में आवश्यक विटामिन और खनिजों को शामिल करने पर बढ़ते फोकस का प्रतीक है।
◦ **संभावित चालक:** इस वृद्धि का श्रेय निम्न को दिया जा सकता है:
■ **स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ**: पुरानी बीमारियों की रोकथाम के लिए फलों और सब्जियों के महत्व के बारे में बढ़ती जागरूकता खपत को बढ़ा सकती है।
■ **शहरीकरण और बदलती जीवनशैली**: बढ़ी हुई खर्च योग्य आय और व्यस्त कार्यक्रम के कारण आसानी से उपलब्ध फलों और सब्जियों को प्राथमिकता दी जा सकती है।
■ **बेहतर बुनियादी ढाँचा**: कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं का विस्तार और बेहतर परिवहन नेटवर्क पूरे वर्ष फलों और सब्जियों को अधिक सुलभ बना सकता है।
• **पशु प्रोटीन:**
◦ **अवलोकन**: अंडे, मछली और मांस पर खर्च भी बढ़ रहा है, जो पौधों के प्रोटीन की तुलना में पशु प्रोटीन को प्राथमिकता देने का संकेत देता है। इस बदलाव को निम्नलिखित से बढ़ावा मिल सकता है:
■ **बदलती प्राथमिकताएँ**: उपभोक्ता स्वाद, कथित स्वास्थ्य लाभ और सामाजिक स्थिति सहित विभिन्न कारणों से उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन स्रोतों की तलाश कर रहे होंगे।
■ **बढ़ी हुई आय का स्तर**: बढ़ती आय व्यक्तियों को अधिक महंगा वहन करने की अनुमति देती है द हिंदू प्लस सारांश: 24.02.2024 मांस और मछली जैसे प्रोटीन स्रोत।
■ **बेहतर विपणन और उपलब्धता:** आक्रामक विपणन अभियान और पशु प्रोटीन उत्पादों की व्यापक उपलब्धता उपभोक्ता विकल्पों को प्रभावित कर सकती है।
• **प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ:**
◦ **टिप्पणियाँ**: प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों, पेय पदार्थों और खरीदे गए पके हुए भोजन पर खर्च भी बढ़ गया है। यह प्रवृत्ति सुविधा और खाने के लिए तैयार विकल्पों के लिए बढ़ती प्राथमिकता का सुझाव देती है,
संभवतः इसके कारण:
■ व्यस्त जीवनशैली: समय की कमी और व्यस्त कार्यक्रम सुविधाजनक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों पर निर्भरता को प्रोत्साहित कर सकते हैं।
■ **पारिवारिक संरचना में बदलाव:** छोटे घरेलू आकार और दोहरी आय वाले परिवारों के कारण घर में खाना पकाने में कम समय खर्च हो सकता है।
■ **विपणन और नवाचार:** खाद्य उद्योग का निरंतर विकास और नए और आकर्षक प्रसंस्कृत खाद्य विकल्पों का विपणन उपभोक्ता की पसंद को प्रभावित कर सकता है।

3. **नीति निहितार्थ:**
• **विशिष्ट क्षेत्रों की ओर फोकस शिफ्ट:** एचसीईएस डेटा उनकी बढ़ती मांग और विकास की क्षमता के कारण फलों, सब्जियों, पशुधन और मत्स्य पालन के लिए उत्पादन और बाजार पहुंच को बढ़ावा देने की दिशा में नीतिगत फोकस को स्थानांतरित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।
• **विकास के रुझान के साथ संरेखित करना:** यह बदलाव अनाज और अन्य गैर-बागवानी फसलों की तुलना में इन क्षेत्रों की देखी गई उच्च विकास दर के साथ संरेखित है, जो उनके संभावित आर्थिक और पोषण संबंधी महत्व को दर्शाता है।
• **कृषि सहायता प्रणालियों का पुनर्मूल्यांकन:** जबकि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से कुछ फसलों को लाभ होता है, एचसीईएस डेटा से पता चलता है कि बाजार-संचालित मांग फलों, सब्जियों, पशुधन और मत्स्य पालन की वृद्धि को बढ़ा रही है। यह अवलोकन सभी कृषि क्षेत्रों के लिए केवल एमएसपी पर निर्भर रहने की प्रभावशीलता और सीमाओं के बारे में सवाल उठाता है, और उच्च विकास क्षमता वाले अन्य क्षेत्रों का समर्थन करने के लिए वैकल्पिक या पूरक नीतियों पर विचार करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

प्रीलिम्स बूस्टर

गगनयान से पहले, इसरो के CE-20 इंजन के पास पहले से ही एक उल्लेखनीय विरासत है

इसरो द्वारा विकसित सीई-20 क्रायोजेनिक इंजन को सफलतापूर्वक मानव-रेटेड किया गया है और इसका उपयोग तीसरे चरण में एलवीएम-3 लॉन्च वाहन को शक्ति देने के लिए किया जाता है। यह इंजन आगामी गगनयान मिशन के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसका उद्देश्य एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को भारतीय रॉकेट पर अंतरिक्ष में लॉन्च करना है। 🚀
- CE-20 इंजन से लैस रॉकेट पहले ही चंद्रयान-2 और -3 जैसे महत्वपूर्ण मिशनों के साथ-साथ 2022 में वनवेब मिशन को लॉन्च करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके हैं। यह विभिन्न अंतरिक्ष प्रयासों का समर्थन करने में इंजन के सिद्ध ट्रैक रिकॉर्ड को प्रदर्शित करता है। 🛰️
- CE-20 इंजन ईंधन के रूप में हाइड्रोजन का उपयोग करता है और अपने पूर्ववर्ती CE-7.5 इंजन की तुलना में अधिक अधिकतम थ्रस्ट का दावा करता है। इंजन प्रौद्योगिकी में यह प्रगति प्रक्षेपण यान के प्रदर्शन और क्षमताओं को बढ़ाती है। 💪
- रॉकेट की मानव-रेटिंग में विशिष्ट घटकों का कठोर परीक्षण शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विफलता की संभावना कम से कम हो। चालक दल के मिशनों के लिए रॉकेट की सुरक्षा और विश्वसनीयता की गारंटी के लिए यह प्रक्रिया आवश्यक है। 🎯
- इसरो ने उनके प्रदर्शन और 6,350 सेकंड की न्यूनतम मानव रेटिंग योग्यता मानक आवश्यकता के पालन को मान्य करने के लिए, CE-20 इंजनों का कुल 8,810 सेकंड का व्यापक हॉट-फायर परीक्षण किया है। ये परीक्षण मिशन स्थितियों के तहत इंजन की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हैं। 🔥
- सीई-20 इंजन का विकास और सफलता इसरो की उपलब्धियों का प्रमाण है, खासकर 1980 के दशक में भारत के खिलाफ अमेरिकी प्रतिबंधों के मद्देनजर। यह स्वदेशी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में भारत की शक्ति को प्रदर्शित करता है। 🏆
- CE-20 इंजन द्वारा संचालित LVM-3 लॉन्च वाहन, कम-पृथ्वी की कक्षा में आठ टन तक के पेलोड उठाने की क्षमता रखता है, जो इसे गगनयान मिशन के लिए पसंदीदा विकल्प बनाता है। यह भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अन्वेषण प्रयासों में सीई-20 इंजन के महत्व पर प्रकाश डालता है। 🌌

ब्लैनेट्स: ब्लैक होल के आसपास की दुनिया

जापान के वैज्ञानिकों ने सुपरमैसिव ब्लैक होल के पास बड़े पैमाने पर धूल और गैस के बादलों के अवलोकन के आधार पर "ब्लैनेट्स" ग्रहों के अस्तित्व का सिद्धांत दिया है, जो तारों के बजाय ब्लैक होल की परिक्रमा करते हैं।
- ब्लैनेट के पृथ्वी से काफी बड़े होने की उम्मीद है, इसका आकार लगभग 3,000 गुना है, और टूटने से बचने के लिए इसे लगभग 100 ट्रिलियन किमी की दूरी पर ब्लैक होल की परिक्रमा करने की आवश्यकता होगी। 🌌
- ब्लैनेट्स का निर्माण सुपरमैसिव ब्लैक होल के आसपास गैस और धूल की विशाल डिस्क के भीतर होने की परिकल्पना की गई है, जो युवा सितारों के आसपास ग्रह निर्माण की प्रक्रिया के समान है। 🌠
- ब्लैक होल अपने आसपास के वातावरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए जाने जाते हैं, उनका गुरुत्वाकर्षण खिंचाव घूमती हुई धूल और गैस को प्रभावित करता है, जिससे संभावित रूप से आसपास के क्षेत्र में ब्लैनेट्स का निर्माण होता है। 🌌
- ब्लैनेट्स की अवधारणा चरम वातावरण में ग्रहों के निर्माण का एक आकर्षक अन्वेषण प्रस्तुत करती है, जो ब्रह्मांड के भीतर ग्रह प्रणालियों की संभावित विविधता में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। 🚀